आनन्ददायी शिक्षण

रेखा शर्मा

सहायक अध्यापिका

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कैलाशपुरा
टोडारायसिंह, टोंक, राजस्थान

प्रधानाध्यापक – हेमराज दरोगा
भोजन माता – संतरा देवी
नामांकन – 49

विद्यालय की भौगोलिक परिस्थिति

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कैलाशपुरा ब्लॉक टोडाराय सिंह में है, ब्लॉक से इस विद्यालय की दूरी 20 किलोमीटर है। यह मुख्य सड़क से दो किलोमीटर दूर कच्चे रास्ते पर है। जाने के लिए अपने साधन के द्वारा ही जाया जा सकता है। इस विद्यालय की स्थापना 2013 में हुई थी। विद्यालय में कुल 62 बच्चों का नामांकन है। शिक्षकों के प्रयास से यहाँ से एक भी बच्चा गाँव के बाहर किसी निजी विद्यालय में पढ़ने नहीं जाता है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा के बाद ही बच्चे अन्य विद्यालयों में पढ़ाई के लिए जाते हैं। यहाँ खारोल जाति के लोग रहते हैं। गाँव के लोग अधिकतर खेती और पशुपालन के व्यवसाय से जुड़े हैं। इस विद्यालय भवन मे तीन कमरे व एक रसोई घर है जिनमे से एक कमरे में क्लास 4 व 5 व दूसरे कमरे में क्लास 1, 2 व 3 एक साथ बैठती है और एक रूम स्टॉफ रूम के रूप में उपयोग में लिया जाता है। विद्यालय के चारों ओर चार दीवारी है। पानी पीने के लिए हेंडपंप है। बालकों व बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय हैं। जिनकी साफ सफाई शिक्षक व बच्चे मिलकर करते हैं। इस विद्यालय में अभी रेखा जी के साथ में एक साथी शिक्षक हेमराज कार्य कर रहे हैं।

शिक्षिका का परिचय

यह केस स्टडी ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ी हुई शिक्षिका, रेखा शर्मा के कार्यों पर आधारित है। जो कि अपने स्पष्टवादी नजरिये, और बच्चों के साथ शिक्षण कार्य के लिए जानी जाती हैं। शिक्षिका रेखा जी ने अपने कार्य की शुरुआत पैरा टीचर के रूप में 2001 में राजकीय प्राथमिक विद्यालय हमीरपुर से की थी और स्थायी नियुक्ति 2008 में हुई थी। उनका पिछले 17 वर्षों का शिक्षण कार्य का लम्बा अनुभव रहा है। इस विद्यालय में वे 2016 से नियुक्त हुई हैं। इससे पहले दो विद्यालयों में कार्य कर चुकी हैं। पिछले समय में बच्चों के साथ सीखने–सिखाने से उनका गहरा लगाव रहा है। साथ ही अपने अनुभवों को शिक्षक साथियों के साथ साझा करने और विभिन्न मुद्दों पर संवाद करने में उनकी रुचि रही है। बच्चों के साथ इनका सहज सम्बन्ध है और खुलकर बच्चे इनके साथ पढ़ते–लिखते हैं। उनकी सहयोग करने की प्रवृत्ति है। इनके इसी व्यवहार और शिक्षक समुदाय के साथ बेहतर संबंध के कारण वे विद्यालय में बच्चों के सीखने को और आनन्ददायी स्वरुप प्रदान करती हैं। विद्यालय में हर समय कुछ न कुछ नया करने को तत्पर रहती हैं। इनके कार्य करने में एक सबसे अच्छी बात ये है कि बच्चों के बीच बैठ कर ही कार्य करती हैं। जिस भी विद्यालय में वे रही हैं बड़ी मेहनत व लगन

के साथ कार्य किया है। रेखा जी को पेड़–पौधे लगाने में रुचि है इस वर्ष उन्होंने 62 पेड़ पौधे लगाए हैं।

सीखने के लिए खुलापन

रेखा जी अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन में आयोजित कार्यशालाओं व कार्यक्रमों मे समय–समय पर भागीदारी करती रही हैं। इनके द्वारा बच्चों को गीत–कविता–कहानी आदि को सुनने व सुनाने के अवसर प्रदान किये जाते हैं। क्लास में बच्चों को स्वतंत्र रूप से विचार रखने व सीखने का वातावरण बनाये रखती हैं। जिस भी विद्यालय को देखने जाती हैं या शिक्षक से मिलती हैं या फाउंडेशन के द्वारा आयोजित कार्यशाला में सीखे गए कार्य को क्लास रूम में लागू करती हैं। साथ ही बच्चों के द्वारा किए गए कार्य को क्लास रूम मे प्रदर्शित करती हैं। मैंने इनकी क्लास रूम में भाषा पर कार्य करते हुए अवलोकन किया। यह छोटी क्लास के सभी बच्चों के बीच में बैठकर मात्रा के शब्दों को पुस्तक में से छंटवाने का कार्य कर रही थीं व क्लास दो को ब्लैक बोर्ड पर शब्द पहेली पर कार्य करवा रही थीं। क्लास अनुशासित थी। पहले क्लास एक को काम करवाया व बाद में दो के लिये ब्लैक बोर्ड पर 5 वर्ण व एक मात्रा पर कार्य किया गया। जब तक क्लास तीन को कहानी की पुस्तकें दे रखी थी तो बच्चे स्वतंत्र रूप से कहानी पढ़ने व समझने का कार्य कर रहे थे। बच्चों के भाषा के स्तर की बात करें तो क्लास 1 में दो से तीन बच्चे पुस्तक पढ़ना जानते हैं व क्लास 2 से 5 तक के सभी बच्चे पुस्तक पढ़ना जानते हैं।

''विद्यालय अवलोकन के दौरान देखा गया कि आपके द्वारा बालकों के साथ भाषा शिक्षण का कार्य बहुत सरल एवं आनन्ददायी तरीके से किया जा रहा है। देखकर बहुत अच्छा लगा कि सभी बच्चे भाषा बोलने–पढ़ने में सहजता का अनुभव कर रहे हैं। आपका कार्य सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। हम आप से आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार से अपने शिक्षण को सहज एवं आनन्ददायी बनाये रखेंगीं।''

– जितेन्द्र कुमार जैन, प्रधानाचार्य/पीईईओ, रा.उ.मा.वि. हमीरपुर

(रेखा शर्मा की पुष्पा शर्मा से हुई बातचीत पर आधारित)